RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 34 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 26 जनवरी 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

शिक्षा जरूरी है लेकिन जड़ों से जुड़े

शान्ति देवी धर्मशक्तू से बातचीज

तब स्वान जलाकर पढ़ाई करते थे

मुनस्यारी में पहली बार मोटरगाड़ी देखने के लिये जब जुटे तो एक महिला घास का गट्ठर लेकर पहुंची और कहने लगी गाड़ी के लिये लायी है। सबने ठहाका लगाया।

कार्यालय प्रतिनिधि

गणतंत्र दिवस के अवसर पर गण की बात की जाए तो ज्यादा उपयोगी होगी क्योंकि तन्त्र की बात तो नियमित होती रहती है। गणों से मिलकर ही सारा तन्त्र भी है और ईमानदार गणों की दुनिया हमेशा चमन होती है। ऐसे ही ईमानदार गण में आज हम श्रीमती शान्ति देवी धर्मशक्तू से बातचीज कर रहे हैं। 28 जून 1955 को मल्ला जोहार के बुर्फू में जन्मी शान्ति देवी शिक्षक के रूप में अपनी सेवा समाज में देती रही हैं और आज भी उनका सन्देश है- 'शिक्षा जरूरी है लेकिन अपनी जड़ों से जुड़े'।

बात शान्ति देवी की करें तो जोहार में भवान सिंह जंगपांगी इनके दादा हुए। माता मन्तोदरी देवी और पिता रुद्रसिंह जंगपांगी के घर इनका जन्म हुआ। रमेश सिंह जंगपांगी, शान्ति देवी (धर्मशक्तू), जगदीश सिंह जंगपांगी, राधा देवी (पांगती) चारों भाई-बहनों ने अपने बचपन में तिब्बत व्यापार के उमंग भरे दिनों को देखा। श्रीमती शान्ति जी बताती हैं कि पहले समय में बालिकाओं को पढ़ाई रिवाज कम ही था परन्तु माता श्रीमती मन्तोदरी जंगपांगी पढ़ाई के लिये बहुत सजग थी और कहती थी- 'मैं तो नहीं पढ़ सकी लेकिन बालिकाओं को पढ़ाऊंगी।' सीमान्त के माइग्रेशन स्कूल में प्राइमरी की पढ़ाई करते हुए शान्ति देवी ने पढ़ाई की। वह बुर्फू के बाद दुम्मर परिवार के साथ जब लौटती तो पढ़ने के लिये दरांती ग्राम जाया करते थे। यह क्रम भकुना (नाचनी) तक था। नमजला से हाईस्कूल करने के बाद मुनस्यारी में इण्टर की पढ़ाई की। माता जी की जिद पर ही अल्मोड़ा से बीटीसी की और प्राइमरी पाठशाला में शिक्षण का अवसर मिला। शुरुआत में दस साल कौसानी, 10 साल सरमोली, दस साल बूंगा रहने के बाद तिकसैन से प्रधानाध्यापिका के के पद से सेवानिवृत्त हुईं।

शान्ति देवी बताती हैं कि पढ़ाई के दौर में स्कूल जाने से पहले वह वह नियमित रूप से अपने ऊनी कारोबार से जुटी रही हैं। जो कुटीर उद्योग का कार्य उन्होंने अपने घर पर देखा उस परम्परा को कभी नहीं छोड़ा। तब संसाधनों की कमी थी निंगाल से स्वान जलाकर उजाला करते हुए बच्चे पढ़ाई करते थे। उन दिनों में जब पहली बार मुनस्यारी में मोटर गाड़ी आई उसे देखने के लिये हम लोग जुटे, सबके लिये कौतुहल था। तब किसी ने कहा गाड़ी कैसे चलती होगी उसके लिये क्या किया जाए तब एक घस्यारी घास का गट्ठर लेकर पहुंची और कहने लगी गाड़ी के लिये लायी है। हम तो बच्चे थे

शेष पृष्ठ 2 पर

भारत के मीलपत्थर

एक महाग्रन्थ जिसका नाम है शतपथ ब्राह्मण

सूर्यकान्त बाली

मूअन दो जड़ो और हड़प्पा का विकास काल 3000 ई.पू. और 2500 ई.पू. के बीच में स्थापित करने वाले पुरातत्वविदों की बात मान ली जाए जो जाहिए है कि इन दोनों और ऐसे अनेक अन्य शहरों का विकास महाभारत के मसय के आसपास या उससे भी काफी पहले हो चुका था जो उस समय की आर्थिक और वैज्ञानिक सम्पन्नता के अनुरूप ही नजर आता है। सिन्धु नदी के किनारे बने इन दोनों शहरों को नदी की धाराओं ने कब ढहाया होगा? कहना मुश्किल है। पर अगर फिर से आधुनिक पुरातत्वविदों की बात मान ली जाए और 2500 ई.पू. में यह दुर्घटना हुई मानी जाए तो कहना होगा कि महाभारत संग्राम के करीब पाँच सौ वर्ष बाद ये दोनों शहर मनुष्य विहीन खण्डरों में तब्दील कर दिए गए। ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना इसी कालखण्ड के आसपास हुई।

काफी पुराने अपने साहित्य के बारे में हम शायद कभी भी दो टूक नहीं बता पाएँगे कि फलाँ किताब की रचना ठीक किस-सन-सम्वत् में हुई। भविष्य की शोधों ने कभी यह काम मुनासिब कर दिया तो भारत के लिए यह आह्लादकारी मौका यकीनन होगा। पर अभी तो हम आसपास और करीब करीब की शब्दावली में ही पुराने साहित्य के बारे में बातें कर सकते हैं। मसलन वैदिक मन्त्रों की रचना महाभारत से करीब तीन हजार साल पहले शुरू हुई जब मनु महाराज ने देश में राज्य व्यवस्था कायम की और यह रचना महाभारत काल तक चलती रही जब मुनि वेदव्यास ने चारों वेदों का संकलन आखिरी तौर पर उस रूप में किया जिस रूप में वे हमें आज मिलते हैं। इसी बीच यानी महाभारत से करीब एक हजार साल पहले वाल्मीकि ने अपनी रामायण लिखी। महाभारत की रचना आज से करीब पाँच हजार साल पहले हुई और ढाई-तीन सौ साल में ही उसे करीब करीब वह शक्ल मिल गई जिस शक्ल में आज वह हमारे हाथों में है। इसी दौर में देश में उस अध्यात्म दर्शन का विकास हुआ जिसने आगे चलकर कई दार्शनिक स्कूलों और धार्मिक मत मतान्तरों को अन्म दिए। समाज, उसकी भाषा, उसके विचारों और रहन सहन के इन्हीं मानदण्डों के सहारे कहना मुश्किल नहीं कि महाभारत के करीब पाँच छह सौ सालों बाद उन ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना शुरू हुई (जिनके बारे में हम दो पहले बता चुके हैं) औरजो कई सदियों तक लिखे जाते रहे। उपनिषदों की रचना इसी दौर में, कुछ ब्राह्मण ग्रन्थों की रचख्ना के बाद शुई हुई जिसके बारे में आगे चलकर लिखेंगे, जल्दी ही।

तो कौन सा था पहला ब्राह्मणग्रन्थ? कहना मुश्किल है। जब तक दूसरे के साथ जुड़े आचार्यों, राजाओं या ज्ञात घटनाओं का तारतम्य न मिल जाए तब तक सटीक तारीख बताना आसान कहाँ है? पर परम्परा ने जिस ब्राह्मण ग्रन्थ को सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण बना दिया है उसका नाम है शतपथ ब्राह्मण। क्यों? कारण उसकी विषयवस्तु में खोजे जाने चाहिए। ब्राह्मण ग्रन्थ कितने लिखे गए कहना मुश्किल है, क्योंकि लगता है अनेक नष्ट हो चुके हैं। जो चौदह के करीब ब्राह्मण ग्रन्थ उपलब्ध हैं उनमें भी ऐतरेय, तैत्तिरीय, शतपथ, शांखयन और गोपथ हर भारतविद की जुबान पर चढ़े रहते हैं। इनमें से अगर शतपथ पूरे ब्राह्मण साहित्य का मानो प्रतीक बन गया है तो जाहिर है कि अपनी विशालता (सौ अध्याय शतपथ) और अपनी जबर्दस्त विषयवस्तु के कारण उसे सबसे ज्यादा महत्व मिल गया है।

तो क्या है वह जबर्दस्त विषयवस्तु? दो तीन पहलुओं से इसे समझा जा सकता है। ब्राह्मण ग्रन्थ लिखने की जरूरत इसलिए पड़ी थी क्योंकि महाभारत के अभूतपूर्व भयानकतम नर संहार के कारण देश में इस जीवन और संसार को नश्वर मानने वाला अध्यात्म दर्शन लोकप्रिय होने लगा और लोगों के बीच उन यज्ञयागादि के प्रति रूचि कम या खत्म होने लगी जो वैदिक मन्त्रों के रचनाकाल से ही लोगों के दिलोदिमाग पर छाए हुए थे। यज्ञवादियों को लगा होगा कि उन्हें अपनी परम्परा को सहेजना चाहिए और इसी इच्छा में से ब्राह्मण ग्रन्थों की, ब्रह्म यानी वेद की व्याख्या यज्ञ के आधार पर करने वाले ग्रन्थों की रचना हुई। शतपथ ब्राह्मण में इस यज्ञ अनुशीलन का पूरा परिचय मिलता है। उस समय प्रचलित शायद ही कोई महत्वपूर्ण यज्ञ रह गया हो, जिसका विश्लेषण शतपथ ब्राह्मण में नहीं दिया गया हो। यज्ञ भी तो कई तरह के थे। एक दिन के यज्ञ और कई दिनों के यज्ञ। दर्श और पूर्णमास जैसी छोटी इष्टियों का इसमें विवरण मिल जाता है तो अश्वमेघ और राजसूय जैसे राजनीतिक महत्व वाले यज्ञ भी इसमें पूरे विस्तार से बताए गए हैं। राजसूय यज्ञ से हम सभी इसलिए परिचित हैं कि यह यज्ञ युधिष्ठिर ने इन्द्रप्रस्थ में करवाया था जहाँ दुर्योधन का पाँव फिसला था जिस पर द्रौपदी को हंसी आ गई थी। अश्वमेघ यज्ञ तो हमारे देश के कथासंसार का हिस्सा बन गया है और ऐसा आखिरी अश्वमेघ गुप्तवंशी

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

हर की पैड़ी पर निषेध का बोर्ड

गंगा सभा ने अलगे साल होने वाले अर्धकुम्भ से पहले पूरे हरिद्वार कुम्भ क्षेत्र में आने वाले सभी धार्मिक स्थानों, मन्दिरों और गंगा घाटों को गैर हिन्दुओं के लिए प्रतिबन्धित करने की मांग उठाई है जिस पर सरकार गम्भीरतापूर्वक विचार कर रही है। इस बीच हर की पैड़ी पर 'अहिन्दू निषेधा क्षेत्र' लिखे बोर्ड लगा दिए गए। गंगा सभा ने इस प्रकार के एक दर्जन से ज्यादा बोर्ड हर की पैड़ी क्षेत्र में प्रवेश करने वाले सभी रास्तों, पुलों की रेलिंग और खम्भों पर लगाए हैं। ड्रोन उड़ाने, फिल्मी धुनों पर रील बनाने या किसी भी तरह के फिल्मांकन को भी प्रतिबन्धित किया गया है। कहा है नियमों का उल्लंघन कर बनाई गई सामग्री यदि इंटरनेट मीडिया पर वायरल होती है तो सम्बन्धित व्यक्तियों के विरुद्ध गंगा सभा कार्रवाई करेगी।

वैसे मुख्य स्नान घाट हर की पैड़ी समेत आसपास का क्षेत्र हरिद्वार नगर पालिका अधिनियम 1916 के अनुसार पहले ही गैर हिन्दू प्रवेश के लिये प्रतिबन्धित है लेकिन हाल में कंदूरा (अरब के शेखों का लिबास) पहनकर दो युवाओं के हर की पैड़ी क्षेत्र में घूमने का वीडियो वायरल होने के बाद गंगा सभा ने ये बोर्ड लगाए हैं। हालांकि, बाद में पता चला कि ये दोनों युवक हिन्दू थे और अपने यूट्यूब चैनल के लिए वीडियो बनाने आए थे।

गंगा सभा क्या कर रही है, यह बात एक है लेकिन यह तो सत्य है ही कि आस्था के नाम पर भी पिकनिक मनाई जा रही है। जबकि नदियों की पवित्रता बनाए रखने के लिये सभी को साथ देना चाहिये। हरिद्वार ही क्या कहीं भी आस्था के धामों में मौज-मस्ती प्रतिबन्धित होनी चाहिये। देखने में आया है कि मेलों में माता के जयकारे लगाने के लिये आने वाले नशे में धुत्त थे और ऊंची आवाज में बहुदद्े गीतों पर नाचते हुए युवा शामिल थे। गंगा सभा तो हर की पैड़ी में निषेध के लिये कदम उठा रही है, इसी प्रकार की सख्ती उन जगहों पर भी हो जहाँ पर परम्परा से हटकर कारनामे हो रहे हैं। इतना ही नहीं वीआईपी व्यवस्था, प्रसाद भण्डारे के नाम पर जबरदस्ती, पार्किंग के नाम पर लूट, यात्रियों से होटल के नाम पर ठगी पर भी रोक लगे। साथ ही दिखावे की सारी प्रवृत्तियों पर निषेध होना चाहिये।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

घर में मृत मिला जॉन फोर्टे

न्यूयॉर्क। 'फ्यूजन और रिफ्यूजी कैंप ऑल-स्टार्स' जैसे बैण्ड के साथ काम कर चुके एवं ग्रैमी पुरस्कार के लिए नामित संगीतकार जॉन फोर्टे का 50 वर्ष की आयु में निधन हो गया है। पुलिस के अनुसार मैसाचुसेट्स के चलमार्क स्थित उनके घर में उनका शव पाया गया। मौत के कारणों की जाँच हो रही है।

पाकिस्तान से शादी करने वाली गिरफ्तार

लाहौर। पाकिस्तान यात्रा के दौरान नवम्बर में एक स्थानीय मुस्लिम से शादी करने वाली भारतीय सिख महिला 48 वर्षीय सरबजीत कौर को गिरफ्तार कर लौहार के सरकारी आश्रय गृह भेज दिया गया है। सरबजीत उन 2000 सिख तीर्थयात्रियों में शामिल थी जिन्होंने गुरु नानक जयन्ती समारोह में भाग लेने के लिये पिदले साल भारत से वाघा सीमा के रास्ते पाकिस्तान में प्रवेश किया था।

नशे में थे जुबिन गर्ग

सिंगापुर। सिंगापुर की एक अदालत को बताया गया कि असम के गायक जुबिन गर्ग पिछले साल नवम्बर में लाजरस द्वीप के पास काफी नशे में थे और उन्होंने लाइफ जैकेट पहनने से मना कर दिया था। इसके बाद वह डूब गए थे। पुलिस को उनकी मृत्यु में किसी प्रकार की साजिश का सन्देह नहीं है।

नेपाली कांग्रेस पार्टी विभाजित

काठमाण्डू। नेपाल कांग्रेस पार्टी औपचारिक रूप से विभाजित हो गई क्योंकि इसके महासचिव गगन थापा और विश्व प्रकाश शर्मा के नेतृत्व वाले गुटों और पार्टी अध्यक्ष शेर बहादुर देउबा के बीच बातचीज किसी समझौते पर पहुंचने में विफल रही। थापा को विशेष सम्मेलन में नेपाली कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष सर्वसम्मति से चुना गया।

ग्रोक पर रोक, अश्लील तस्वीरें नहीं बनाएगा

नई दिल्ली। अश्लील डीपफेक तस्वीरों को लेकर भारी विरोध के बाद सोशल मीडिया मंच 'एक्स' ने अपने एआई चैटबॉट ग्रोक को अवैध रूप से आपत्तिजनक कपड़ों में लोगों की तस्वीरें बनाने से रोकने के लिए प्रौद्योगिकी उपाय लागू किए हैं। 'एक्स' ने कहा है कि यह प्रतिबन्ध पेड सब्सक्राइबर (सशुल्क ग्राहक)समेत सभी यूजर्स पर लागू होता है। इसके अलावा एक्स के ग्रोक खाते के जरिए तस्वीर बनाने और उन्हें एडिट करने की सुविधा अब सिर्फ सब्सक्राइबर्स के लिए ही उपलब्ध होगी।

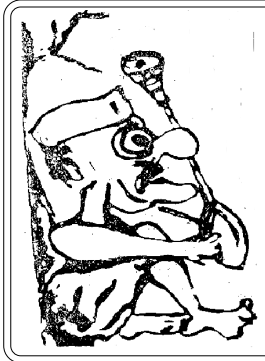

फसक

दाज्यू, हर कोई अपने को सवाशेर बता रहा ठैरा

सोशल मीडिया पर कड़कड़ाट खूब हो रही है बल

दाज्यू, जब से सोशल मीडिया पर उर्मिला आई है चारों ओर सनसनी.....। माया, ममता छोड़ चुके बलवन्त दाज्यू भी फेसबुक पर दो राउण्ड नजर दौड़ा लेते हैं। कह रहे थे- 'इनी फनफानट और सनसनाट से दिन कट जाता है।' दाज्यू, जब तक प्राण हैं दिन भी काटने हुए। माया, ममता भले ही छोड़ दो लेकिन दुनिया की लपेट ही कुछ ऐसी है कि जब तक प्राण है खजबज लगी है। तभी तो हर कोई अपने को सवाशेर बता रहा ठैरा। उर्मिला कहती है- 'मेरे पास रिकार्डिंग है, पोल खोल दूंगी।' आरती कहती है- 'सारी सच्चाई बता दूंगी। मुझपर झूठे आरोप न लगाया जाए।' सुरेश राठौर का कहना है- 'उसका घर बर्बाद कर डाला है। सच्चाई सामने जरूर आएंगी।' इसके अलावा भी बहुत सारे नाम हैं जो कह रहे हैं, सबकुछ खुल जाएगा। दाज्यू, किस-किस की सच मानी जाए? सोशल मीडिया पर कड़कड़ाट खूब हो रही है बल। हर कोई अपने को सवाशेर बता रहा ठैरा। दाज्यू, अंट-संट पत्तरफाड़ भी घूम रहे हैं और चिल्ला चिल्ला कर जोई-सोई सोशल मीडिया पर डाल रहे हैं। माघ का महीना है, बजा लेने दो डमरू।

पहाड़ में कई जगह नरभक्षी का खौफ बना हुआ है। धामी ज्यू कह रहे हैं- 'मोदी के नेतृत्व में भाजपा हैट्रिक लगाएगी। भाजपा सरकार साहसिक निर्णय ले रही है।' दाज्यू, हरदा कह रहे हैं- 'लोग अब और ज्यादा अन्याय नहीं सहेंगे।' बागेश्वर उत्तरायणी कौतिक में सरयू बगड़ में पार्टी वालों ने इस बार जोरदार सभाएं की। हरदा मोटरसाइकिल में सवार होकर गये और भरभर कर भाषण दिया। कांग्रेस के पाण्डाल में गणेश गोदियाल, गोविन्द सिंह कुन्जवाल, करन माहरा भी थे। भाजपा के पाण्डाल में सांसद अजय टम्टा, विधायक सुरेश गड़िया थे जबकि यूकेडी के पाण्डाल में भी जबर्दस्त भीड़ जुटी। उधर हल्द्वानी में सोशल मीडिया पर भर्राने वाली ब्लॉगर ज्योति अधिकारी 6 दिन जेल में गुजारने के बाद छूटी। बब्बू दा कह रहा है- 'ज्योति दी बहुत ही सुरीला बोलती है। उसे गलत फंसा दिया। गाली-मुखाली करने वाले सण्ड-मुसण्ड खुलेआम घूम रहे हैं।' दाज्यू, किसको जो क्या कहा जाए इस कलजुग में। जिसकी जैसी चल रही है चला रहे हैं। सल्ट में दो युवकों को 22 किलो गांजे के साथ पुलिस ने पकड़ लिया। रुद्रपुर में एक युवती को देह व्यापार में धकेलने वाली महिला लक्ष्मी आंटी को 6 माह के कारावास की सजा हुई है बल। दाज्यू, सब जगह धकेलाधकेल हो रही है, इसलिये बहुत बचकर चलना चाहिए। दाज्यू, बाजपुर में भाजपा विधायक अरविन्द पाण्डेय पर भूमि विवाद के एक मामले में गम्भीर आरोप लगे है। ग्राम विचपुरी में एक पुराना भूमि विवाद सुर्खियों में है। विधायक इसे निराधार बता रहे हें। दाज्यू, पड़ताल तो होनी ही है क्योंकि चुनाव की डोर थामे सन्तराम सकर्त हैं बल। वे गदरपुर में चल रहे दंगल में भी गये थे। प्रदेश भर में पता नहीं क्या हो गया है। कोई आत्महत्या की धमकी दे रहा है तो कोई खतरा बता रहा है। काशीपुर के समाजसेवी गगन कांबोज ने भी अपने को खतरा बताया है। भगवान सबकी रक्षा करें। -तुम्हारा भुली झकरुवा

शिक्षा जरूरी है.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

लेकिन गाड़ी ईंधन से चलती है जानने वालों ने ठहाका लगाया। शान्ति देवी बताती हैं कि पिता जी अपने साथियों के साथ व्यापार के लिये हूण देश जाते थे। उन परिस्थितियों को बचपन में देखा है और फिर उस समय को भी देखा जब भारत चीन युद्ध होने पर व्यापार बन्द हो गया। व्यापार ठप होने से लोगों के कारोबार का तानाबाना टूट गया और उसके बाद लोगों का ध्यान नौकरी की ओर गया।

शान्ति देवी का विवाह बलवन्त सिंह धर्मशक्तू जी के साथ हुआ। इनके परदादा उस दौर के शेरजांग सिंह धर्मशक्तू थे। माता केशी देवी और पिता केशर सिंह जी के सुपुत्र बलवन्त सिंह धर्मशक्तू भी ईएमई से सेवानिवृत्त धर्मशक्तू जी भी सामाजिक कार्यों में अभिरुचि रखने वालों में हैं। हरि प्रदर्शनी के अवसर पर हमेशा सहयोगी बनकर अग्रणीय रहने वाले बलवन्त सिंह जी की संगत युवा-बुजुर्ग सभी से है। इनके सुपुत्र मनोज सिंह धर्मशक्तू हैं।

इस प्रकार दरकोट की मूल निवासी शान्ति बलवन्त धमोत का वर्तमान ग्राम सरमोली मुनस्यारी है और वह वर्तमान में मुकुल विहार, लालडांट रोड हल्द्वानी में निवास करती हैं। 70 वर्ष की आयु पार करने के बाद भी आप सामाजिक जीवन में सक्रिय हैं और अपने बुजुर्गों की सीख को युवाओं तक सम्प्रेषित करने में बेहतर कर रही हैं।

गंगोलीहाट विधानसभा में दिनेश आर्य कर चुके हैं मजबूत दावेदारी

गंगोलीहाट/पांख्। इन दिनों में पूरे उत्तराखण्ड में राजनीतिक परिदृश्य बेसुमार उलझा हुआ है लेकिन विधानसभा चुनाव के लिये रास्ते तालशते नेता भी सक्रिय हैं। बात गंगोलीहाट की करें तो भाजपा से दिनेश आर्य, दर्पण कुमार, भूपाल आर्या, कांग्रेस से खजान गुड्डू, मनोज कुमार की दौड़धूप देखी जा रही है लेकिन हलचल मचाने वालों में युवा नेता दिनेश बेहद चर्चा में हैं।

भाजपा के वरिष्ठ नेता व पूर्व प्रदेश मंत्री दिनेश आर्य ने सुरक्षित सीट विधानसभा गंगोलीहाट से 2027 के लिये मजबूत दावेदारी की है। वह भाजपा के अनु.मोर्चे के जिला महामंत्री, जिलाध्यक्ष, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य तथा प्रदेश मंत्री जैसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभा चुके हैं। इतना ही नहीं, विगत कई वर्षों से भाजपा संगठन की महत्वपूर्ण चुनावी अभियान के विस्तारक योजना के तहत कई विधानसभाओ के विस्तारक, प्रदेश से अन्यत्र उत्तर प्रदेश, बिहार, हिमांचल, पश्चिम बंगाल चुनावों में प्रभारी की जिम्मेदारी भी निभा चुके हैं। वह वर्ष 2017 व 2022 के विधानसभा चुनाव में भी दावेदार रहे लेकिन संगठन के निर्णय पर अपने प्रत्याशी को चुनाव जिताने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई चाहे भाजपा की कैसी ही परिस्थिति रही हो पुंगराऊघाटी से लगातार बढ़त ही रही जिसमें यह बेहद सक्रिय थे। इनकी जन आन्दोलनकारी छवि होने के कारण क्षेत्रीय जनता में गहरी पैठ है। जिसका उदाहरण विगत पंचायती चुनाव में उन्होंने अपनी पत्नी को जिलापंचायत सदस्य पद के लिए मैदान में उतारा और जीत दर्ज करवाई। विधानसभा गंगोलीहाट का ताजा समीकरण संकेत कर रहा है यदि भाजपा को यह सीट चाहिये तो ग्रामीण मण्डल के पुंगराऊघाटी से युवा प्रत्याशी पर दांव खेलना चाहियें क्योंकि अभी तक गणाई, गंगोलीहाट, चौड़मन्या, बनकोट से भाजपा के प्रत्याशी रहे हैं इसलिए नया क्षेत्र होने एवं इस क्षेत्र से कभी भी प्रतिनिधित्व नहीं मिलने से इस बार क्षेत्र से सम्भावना है। बताते चलें कि दिनेश आर्य 7 वर्ष की सेवा विद्याभारती में दे चुके हैं और संघ के प्रशिक्षित स्वयंसेवक भी हैं। वह छात्र जीवन के तुरन्त बाद 2012 में विधान सभा चुनाव लड़ चुके हैं जबकि पुंगराऊघाटी उसी समय डीडीहाट विधान सभा से अलग हुई ही थी, केवल 19 दिन चुनाव प्रचार करने के बाद भी 2486 वोट लाए तब भाजपा की गीता ठाकुर चुनाव हारी और कांग्रेस के नारायण राम जीते थे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

जोहार शौका केन्द्रीय समिति का आयोजन

यह केवल खेल नहीं जीतने का अभियान भी है

प्रतियोगिता के मुख्य प्रायोजक दृष्टि सेंटर फॉर एडवांस्ड आई केयर सुभानु आई हॉस्पिटल

पि.हि.प्रतिनिधि

हल्द्वानी। जोहार शौका केन्द्रीय समिति हल्द्वानी द्वारा आयोजित द्वितीय अखिल भारतीय जोहार शौका बैडमिंटन प्रतियोगिता का समापन देव शटलर्स में सम्पन्न हुआ। जोहार मुनस्यारी मूल के शौका समाज की इस प्रतियोगिता में 14 विभिन्न कैटेगरी में 8 से 83 वर्ष के 165 पुरुष और महिला खिलाड़ियों ने भाग लिया। मिक्सड डबल्स स्पर्धा में परिवार से ही टीम बनई गई। इसमें ससुर बहू, मामा भांजी, देवर भाभी, पति पत्नी, भाई बहिन, पिता पुत्री आदि की जोड़ी होने से रोमांचक मुकाबले हुए। उत्तराखण्ड बैडमिंटन एसोसिएशन के सचिव बहादुर सिंह मनकोटी मुख्य अतिथि, प्रख्यात मैराथन धावक और सेवानिवृत उप निदेशक खेल और रितेश बिष्ट अध्यक्ष नैनीताल जिला बैडमिंटन एसोसिएशन विशिष्ट अतिथि रहे। दृष्टि सेंटर फॉर एडवांस्ड आई केयर और सुभानु आई हॉस्पिटल इस प्रतियोगिता के मुख्य प्रायोजक थे। अण्डर 13 बालक एवम् बालिका एकल में निलांश टोलिया और निरोशा रावत, अण्डर 17 बालक और बालिका एकल में हर्ष बर्फाल और खुशी धर्मशक्तू, ओपन एकल पुरुष एवम् महिला में डा. कविराज मर्तोलिया और भावना रावत, ओपन युगल पुरुष और महिला में डा. गौरव मर्तोलिया एवम् डा. हिमांशु धर्मशक्तू और भावना रावत और गीता निखुर्पा, मिक्सड डबल्स में भावेश जंगपांगी और मेघा टोलिया, पुरुष 35+ युगल में डा. हिमांशु धर्मशक्तू और डा. अमित मर्तोलिया, पुरुष 45+ युगल में प्रकाश बृजवाल और धीरू धर्मशक्तू, पुरुष युगल 55+ में नरेन्द्र जंगपांगी और त्रिलोक पंचपाल, पुरुष युगल 65+ में डा. ललित टोलिया और भवान रावत, पुरुष युगल 70+ में गोकर्ण धर्मशक्तू और डा. प्रहलाद मर्तोलिया विजयी रहे। 9 वर्ष की बालिका निरोशा रावत को प्रतिभावान खिलाड़ी का पुरस्कार दिया गया। कार्यक्रम का संचालन कैलाश धर्मशक्तू ने किया और जोहार शौका केन्द्रीय समिति के अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह जंगपांगी ने सभी आभार व्यक्त किया।

जोहार शौका केन्द्रीय समिति के इस आयोजन की पृष्टिभूमि की पड़ताल करें तो हर्ष होता है कि इस प्रकार के आयोजन के द्वारा खेल और खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के अलावा आपस में हर आयु वर्ग के लोगों को जोड़ने का बड़ा अभियान भी है। यह केवल खेल नहीं जीतने का अभियान भी है। ऐसे समय में जब लोग एकाकी होते जा रहे हैं, मोबाइल खेलों में उलझे हैं, सोशल मीडिया की आदत में एक-दूसरे से मिलना जुलना कम होता जा रहा है, केन्द्रीय समिति ने विभिन्न आयु वर्ग सहित जिस प्रकार से प्रतियोगिता का संचालन किया है वह सराहनीय है। हल्द्वानी में हुए इस आयोजन में तमाम महानगरों से भी बेहतरीन खिलाड़ियों ने भागीदारी की और प्रतिभावान युवाओं का खेल देखने को मिला। महिला वर्ग की ओर से विशेष भागीदारी इसमें देखने को मिली। सामाजिक कार्यों में अग्रणीय रहने वाले देवेन्द्र सिंह धर्मशक्तू हों या प्रेम सिंह मर्तोलिया इनका बैडमिंटन कोर्ट में उतरना नई पीढ़ी को उत्साहित कर गया। डाक्टर दिनेश सिंह मर्तोलिया हों या प्रकाश सिंह बृजवाल हों इनका उत्साह बताता है कि अपनी सरकारी सेवाओं के अलावा खेल से जुड़े रहना आगे बढ़ने को जरूरी है।

ज्योतिष की बातें- 265

इस सप्ताह भी चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य किसी भी ग्रह का राशि परिवर्तन नहीं हो रहा है। सम्पूर्ण सप्ताह मंगल उच्चराशि मकर में, शुक्र मित्रराशि मकर में, बुध व शनि समराशि मकर व मीन में, सूर्य व गुरु शत्रुराशि मकर व मिथुन में गोचर करेंगे तथा चन्द्रमा इस सप्ताह मेष, वृषभ, मिथुन व कर्क राशि में क्रमशः गोचर करेगा।

1 फरवरी 2026 को शुक्र मकर राशि में पश्चिम दिशा में उदय हो जाएगा अतः अभी तक स्थगित चल रहे गृह प्रवेश, विवाह आदि शुभ कार्य अब प्रारम्भ हो जाएंगे।

भीष्माष्टमी- माघ शुक्ल अष्टमी मध्याह्नव्यापिनी तिथि, तदनुसार सोमवार 26 जनवरी 2026 को भीष्माष्टमी होगी। भीष्म पितामह ने आजीवन अविवाहित रहकर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया था। उन्होंने उत्तरायण आने पर माघ शुक्लपक्ष अष्टमी के दिन ही स्वेच्छा से प्राण त्याग किए थे। महाभारत के अनुसार जो मनुष्य माघ शुक्ल अष्टमी को भीष्म के निमित्त तर्पण, जलदान आदि करता है उसके वर्ष भर के पाप नष्ट हो जाते हैं।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 154

पीने का पानी

प्रथम सिद्धान्त तो यही है कि जहाँ पर जिस तरह का पानी प्राकृतिक रूप से उपलब्ध होता है वह पानी वहाँ के निवासियों के लिए अनुकूल होता है। पहले यह तो सुना गया था कि खराब पानी होने के कारण किसी को डायरिया हो गया या लोग बीमार पड़ गए लेकिन यह पहली बार सुना गया की सरकारी पानी पीकर लोगों की मृत्यु तक हो गई। यह भयंकर घटना होने के बाद भी कोई परिवर्तन नहीं आएगा।

पहली बातए फैक्ट्री से निकलने वाले पानी से नदियों का जल अशुद्ध तो होता ही है उसके साथ ही भूमिगत जल भी अशुद्ध हो जाता है। दूसरी बात- जल वेग धूप व हवा से स्वयं शुद्ध होता रहता है, यह सिद्धान्त है। लेकिन आजकल पीने के पानी के लिए बड़े.बड़े बांध बनाए जाते हैं उन बांधों में पानी स्थिर रहने के कारण प्रथमतः अशुद्ध हो जाता है और फिर उसको सुरंग के माध्यम से दूर शहरों तक ले जाने से हवा और धूप न लगने के कारण वह और भी अशुद्ध हो जाता है।

तीसरा कारण सर्वाधिक घातक है जो प्रत्यक्ष मृत्यु का कारण बनता है। कीड़े मकोड़ों व अन्य जीव जन्तुओं को मारने के लिए कीटनाशकों का उपयोग बड़े पैमाने पर होता है। इन कीटनाशकों से भूमिए जल और इसके साथ हवा भी तीनों भयंकर प्रदूषित हो चुके हैं। दूसरे जीवों को मारने के लिए पैदा किये गये जहर से एक दिन मरना तो मनुष्य को भी है हीए आज नहह्न तो कल । एक तरु तो मनुष्य जहर पैदा करना चाहता है और दूसरी तरफ पीने का पानी भी शुद्ध चाहता है। ये दोनों कार्य एक साथ नहीं हो सकते। जिस प्रकार गाल फुलाना और हंसना एक साथ नहीं हो सकते।

-ओंकार नाथ कोष्टा

राजनीति के मौके.....

अगस्त्यमुनि गेट विवाद

उत्तराखण्ड में इन दिनों अंकिता हत्याकाण्ड सहित अन्य मामलों में भी जोर दिखाई दे रहा है। इन सारे प्रकरणों में न्याय की गुहार और जांच की आश के अलावा राजनीति के मौके तलाशने वाले जुटे हैं।

अगस्त्यमुनि क्षेत्र के प्रसिद्ध अगस्त्य मन्दिर से जुड़े विवाद में जनता और प्रशासन आमने-सामने हैं। प्रशसन ने त्रिभुवन चौहान समेत 52 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। असल में अगस्त्यमुनि स्थित खेल मैदान में स्टेडियम निर्माण को लेकर लम्बे समय से विवाद चल रहा है। ग्रामीणों का कहना है यह मैदान मुनि महाराज से जुड़ा हुआ है और यहां स्टेडियम का निर्माण धार्मिक परम्पराओं और स्थानीय भावनाओं के खिलाफ है। इस बीच 15 वर्षों बाद मुनि महाराज की दिवारा यात्रा में गुस्साए लोगों ने गेट तोड़ दिया। इस प्रकार पूरे मामले को लेकर रुद्रप्रयाग क्षेत्र में जबर्दस्त माहौल चल रहा है।

सुखवन्त मामले में गुस्सा

उधमसिंहनगर जिले के किसान सुखवन्त सिंह की आत्महत्या के बाद से लोगों ने गुस्सा जताया है। आत्महत्या से पहले सुखवन्त ने जो वीडियो जारी की उसके बाद सीएम कह चुके हैं कि दोषी सजा पाएंगे। मामले में आयुक्त ने एसएसपी मणिकान्त मिश्रा व अन्य आरोपी से पूछताछ कर बयान दर्ज किए हैं। प्रकरण में एसआईटी जाँच जारी है। मामला जमीन से जुड़ा है, जिसमें हाईकोर्ट ने आरोपियों की गिरफ्तारी पर रोक लगाने के साथ ही जाँच में सहयोग को कहा है। कांग्रेस ने इस प्रकरण में सीबीआई की मांग करते हुए डीजीपी से भेंट की।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

रंल्वों ज्या एवं धारचूला साहित्योत्सव

मातृभाषा दिवस का भव्य आयोजन

'रनी ठुम चारू ची स्युंमो' सत्र में एक दिवसीय बारात की प्रासंगिकता पर विचार

धारचूला। रं कल्याण संस्था के द्वारा रंल्वो के संरक्षण व उन्नयन तथा रं-संस्या के वैविध्यपूर्ण जीवन-दर्शन व इतिहास पर विहंगम दृष्टि डालते हुए उसे सजोने के क्रम में इस बार 'रंल्वो ज्या एवं धारचूला साहित्योत्सव' का ठोस आयोजन किया गया। आयोजन में गत वर्ष के आयोजन के दौरान रं जन-जीवन के सामाजिक, आर्थिक, सामाजिक एवं साहित्यिक सभी पहलुओं पर विभिन्न सत्रों के माध्यम से दृष्टि डालने के अलावा आगे की रूपरेखा तैयार की गयी। सत्र संचालकोकं एवं प्रतिभागियों ने अपने अनुभव एवं संस्मरणों के द्वारा युवाओं को प्रोत्साहित भी किया। रं-रंस्या के स्वर्णिम अतीत के अनछुए पहलुओं को लिपिबद्ध कर संजोने के लिये मंथन किया गया।

शोभा यात्रा के साथ शुरू हुए आयोजन में दारमा, व्यास, चौंदास घाटी के रं जनजाति समाज के लोगों ने अपने पारम्परिक परिधानों में उपस्थिति के साथ गांधी चौक में नृत्य कर समा बांधा। इसमें नेपाल से भी व्यासी शौका समाज के आमंत्रित दल ने प्रतिभाग किया। संस्था के केन्द्रीय अध्यक्ष पूर्व सचिव अरविन्द सिंह ह्यांकी, पूर्व अध्यक्ष चन्द्र सिंह नपलच्याल, जनजाति सलाहकार परिषद के उपाध्यक्ष अशोक नबियाल, शाखा अध्यक्ष प्रकाश गुन्ग्याल ने दीप प्रज्जवलित किया।

शाखा अध्यक्ष प्रकाश गुन्ग्याल ने कहा कि रं भाषा प्राचीन काल से ही अपने विशेष उच्चारण एवं शब्दों के कारण देव भाषा कही गई है। इसको सदियों से बुजुर्गों ने संरक्षित कर नई पीढ़ी को दिया है। केन्द्रीय अध्यक्ष अरविन्द सिंह ह्यांकी ने कहा कि स्थानीय दानवीर नन्दराम लाला जिन्होंने रं लिपि के लिए ऐतिहासिक कार्य किए उनका जन्मदिन होने के कारण ल्वो ज्या और भी ज्यादा खास हो जाता है। संचालक नन्दन न्यास के अध्यक्ष कृष्ण सिंह गर्ब्याल ने बताया कि रं लिपि के लिए तेजी से प्रयास किये जा रहे हैं।

इस अवसर पर पर्वतारोही योगेश गर्ब्याल, अंजलि नबियाल, रविन्द्र पतियाल, महेन्द्र ह्यांकी, राम सिंह, अरविन्द खैर, डॉ. विजय फिरमाल, डॉ. किशन सिरखाल, दिनेश चलाल, दीपक रौंकली सहित तमाम लोग उपस्थित थे।

मातृभाषा दिवस रं ल्वो ज्या एवं साहित्योत्सव दूर-दराज से पधारेअतिथियों के स्वागत के बाद विभिन्न सत्रों में महत्वपूर्ण विचार मंथन हुआ। सत्र कुंचादिलं-कुंचा रालं पर हुई चर्चा में कुंचा जाने के संस्मरणों एवं घाटियों के बीच सामाजिक सौहार्द बढ़ाने पर बात हुई। रं राजू ची जड़ी-बूटी : लक्या उसू-व्यो सत्र में जड़ी बूटी द्वारा उपचार करने वाले, इसकी जानकारी रखने वालों की परिचर्चा महत्वपूर्ण थी। रनी ठुम-चारू ची स्युंग्मो सत्र में विभिन्न घाटियों में प्रचलित भले रीति रिवाजों के लाभ, समय के साथ उनके प्रभावित होने से दुष्परिणामों पर चर्चा की गई। इसी प्रकार किदं (ज्ञानिमा-बिलीथ) ख ची मालो- जुमला वास लनपन सत्र के अन्तर्गत तिब्बत व्यापार एवं नेपाल के क्षेत्रों में ऐतिहासिक रूप से रं समुदाय द्वारा किए जाने वाले व्यापार-वृत्ति के अनुभव, लाभ एवं वर्तमान स्थिति पर चर्चा हुई। छिरा छिरा इंगे रं बेरागी मं सत्र के अन्तर्गत घाटियों के बुजुर्ग बैरागियों के द्वारा येना वी वैरागियों का संस्मरण, रं राजू में प्रचलित बैरा-बाजी प्रथा की पृष्ठभूमि, रं गीत-संगीत पर पर नेपाली कुमाउंनी गीत संगीत का प्रभाव व बैरा-बाजी बिधा सीखने की परम्परा पर विस्तार से बातचीज हुई।

इसी प्रकार एसएसबी, आईटीबीपी में तैनात बुजुर्गों के द्वारा प्रारम्भिक दिनों में रं राजू में रोजगार सृजन एवं जीवन यापन तथा आत्म/क्षेत्रीय सुरक्षा के सन्दर्भ में एसएसबी, आईटीबीपी के योगदान पर चर्चा के अलावा रं राजू में शिक्षा के प्रसार में माइग्रेशन स्कूलों की भूमिका, शैक्षिक उन्नयन के अन्य पड़ावों गुंजी, दुग्तू, खेत, माकम, कैलास, धारचूला आदि स्थानों के स्कूल से होते रं कम्यूनिटी स्कूल की स्थापना तक पर विद्वानों ने अपने विचार रखे। साथ ही रं समाज साहित्य पर गम्भीर मंथन के साथ सुलगे सवालों पर चर्चा हुई।

रंल्वो दिवस के अवसर पर 'रनी ठुम चारू ची स्युंमो' सत्र के अन्तर्गत प्रतिभागी के रूप में सम्मिलित जीवन सिंह दुग्ताल ने एक दिवसीय बारात की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए 'वन डे मैरिज' को आज के दिखावे के दौर में किये जाने वाले फिजूलखर्ची को नियंत्रित करने वाला एक प्रभावशाली कदम बताया साथ ही दो दिवसीय बारात की तुलना में एक दिवसीय शादी दिन में सम्पन्न किये जाने के कारण व्यक्ति की खपत पर आने वाली कमी को भी समाज हित में लाभकारी बताया। कहा कि मुझे भी हमारे गाँव की दरमा जाने वाली दो वन डे बारात में शरीक होने का मौका मिला जो समय की बचत और तड़क-भड़क रहित शादी के दृष्टिकोण से सुखद अहसास से भरपूर मेरा एक अलग ही अनुभव रहा।

श्री दुग्ताल के सटीक उदगार ने जिस प्रकार से बात को रखा वह समाज के लिये प्रभावशाली है, एक दिवसीय बारात का प्रचलन अभी दरमा राजू में तीव्रता से हो रहा है इसी तरह ब्यंखो-बंबा में भी इस प्रथा का अनुकरण किये जाने पर विचार किया जा सकता है।

रंल्वो अपनाये जाने के सन्दर्भ में श्री जीवन सिंह दुग्ताल की एक और बात लोगों के हृदय की गहराई तक उतर गयी जब उन्होंने कहा जिस दिन हम पति-पत्नी दाम्पत्य सूत्र में बंधे उस दिन से आज तक हम दोनों आपस में रंल्वो में ही बात करते है फलतः उनके बच्चे भी अब धाराप्रवाह रंल्वो में पारंगत हैं। कार्यक्रम में दुग्ताल दम्पत्ति के व्यवहारिक कार्यों की प्रंशसा करते हुए कहा गया कि वास्तव में यह दोनों ने समाज के लिए एक सन्देश के साथ अनुकरणीय उदाहरण भी प्रस्तुत किया है।

उल्लेखनीय है कि श्री जीवन सिंह दुग्ताल रं सरोकार से अथाह लगाव रखने वाले जिज्ञासु प्रवृत्ति के शख्स हैं। 2018 में अपने गाँव दुग्तु पर एक पत्रिका का सम्पादन किया जिसमें दुग्तु गाँव का इतिहास, लोक कथा और गाँव से सम्बन्धित महत्वपूर्ण जानकारियाँ समाहित की गयी हैं। यह पत्रिका दुग्तु गाँव पर आधारित एक पठनीय समग्र ज्ञानकोष है। प्रसंगवश श्री दुग्ताल नवम्बर 2024 में सहायक आयुक्त (आईआरएस) कस्टम एवं जीएसटी के पद से सेवानिवृत्त हुए, इससे पूर्व सीधी भर्ती से नायब तहसीलदार के पद पर चयन पश्चात अल्मोड़ा में नायब तहसीलदार के पद पर नियुक्ति हुई, ड्यूटी के दौरान गाँव में राजस्व वसूली के लिए गये गाँव की महिलाओं ने राजस्व वसूली का हाथ में धारदार दराती लेकर कड़ा विरोध किया, इस वाकया से जीवन भाई विचलित हो गये, इसी बीच इनका केन्द्रीय आयकर में इन्सपेक्टर के पद पर चयन हुआ तो नायब तहसीलदारी को तिलांजलि देकर इन्होंने सेन्ट्रल एक्साइज में नये जीवन की शुरुआत की ।

काठगोदाम-नैनीताल हाईवे टू-लेन बनाने को कटेंगे 17297 पेड़

हल्द्वानी। काठगोदाम से नैनीताल के बीच का सफर और सुगम करने के लिये पेड़ों की बलि होनी होनी है। इस राजमार्ग को टू-लेन बनाने की महत्वाकांक्षी योजना के तहत कुल 17297 पेड़ों को काटने की तैयारी हो चुकी है। जिसके लिए राष्ट्रीय राजमार्ग ने विस्तृत रिपोर्ट बनाकर वन विभाग को भेज दी है। इनमें से कई पेड़ दशकों पुराने हैं।

डेढ़ लेन से टू लेन होने वाले मार्ग की लम्बाई 36 किलोमीटर है। वर्तमान में इस सड़क की चौड़ाई लगभग 7 मीटर है, जिसे बढ़ाकर दस मीटर किया जाएगा। इस परियोजना पर केन्द्र सरकार 709 करोड़ रुपये खर्च करने जा रही है। हाईवे के चौड़ा होने के बाद सड़क के दोनों ओर एक-एक मीटर की सोल्डर लाइन बनाई जाएगी, जिससे वाहन चालकों के साथ-साथ पैदल यात्रियों को भी काफी सुविधा होगी। कटान की जद में आने वाले पेड़ों में देवदार, बांज, काफल, चीड़, तुन, साज, जामुन, आम, सुरई, मोरपंखी प्रजातियां शामिल हैं। पेड़ों की कटाई को लेकर पर्यावरण प्रेमियों में चिन्ता है क्योंकि जिस प्रकार से भूस्खलन और जलवायु परिवर्तन के बीच इतनी बड़ी संख्या में वृक्षों का कम होना भविष्य के लिये चुनौती बन सकता है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

एक महाग्रन्थ.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

सम्राट समुद्रगुप्त ने आज से करीब डेढ़ हजार साल पहले किया था। राजनीतिक महत्व के इन्हीं यज्ञों में से एक नाम है वाजपेय जिसके मुख्य पुरोहित को वाजपेयी कहा गया और ये वाजपेयी नाम आज तक बदस्तूर चल रहा है। इन सभी यज्ञों या पूरा सांगोपांग विवेचन शातपथ ब्राह्मण में है।

इन राजनीतिक महत्व के यज्ञों के अलावा घरेलू महत्व के भी कई यज्ञों का पूरा विस्तार से विवरण शतपथ ब्राह्मण में है। सोमयाग भारत के राजाओं का ही नहीं, भारतीय गृहस्थों का भी प्रिय यज्ञ रहा है जिसमें सोमलता को पीसकर उसका रस निकाला जाता है और इसमें गाय का दूध और शहद मिलकार उसे अग्नि के जरिए देवताओं को समर्पित किया जाता है। पहले यह यज्ञ महज एक दिन का हुआ करता था। अत्रि ऋषि के वंशजों ने इसका विस्तार चार दिन के सामयाग में किया और भारत से बाहर ईरान में भी इसे लोकप्रिय बनाया। यही सोम ईरान के प्राचीनतम धर्मग्रन्थ अवेस्था में (स के स्थान पर ह हो जाने से) ह्ओम या होम के रूप में प्रतिष्ठित हुआ था। शतपथ के सौ अध्यायों को जिन चौदह काण्डों में बाँटा गया है, उनमें से दो काण्ड (संख्या 3 और 4) इसी लोकप्रिय सोमयाग के बारे में है। और न जाने कितने ही छोटे बड़े यागो का विवेचन शतपथ ब्राह्मण में है जिनमें अग्निहोत्र, पिण्डपितृ, चातुर्मास्य, उपनयन, अनिष्टोम, ज्योतिष्टोम ही नहीं और भी आप जितने चाहे गिना सकते हैं।

चूँकि उस युग में यज्ञों का स्थान क्रमशः नीचे जा रहा था और अध्यात्मवाद क्रमशः उठान पर था, इसलिए शतपथ के रचयिता या रचयिताओं को (जिनके नाम किसीक को नहीं मालूम) यही ठीक लगा कि इन यज्ञों की संगति आध्यात्मिकता के साथ बिठाकर पूरे विवेचन को पेश यिा जाए। इसलिए अगर आप शतपथ पढ़ जाएं तो वहाँ आपको कई बार उन देवताओं का परब्रह्म रूप समझाने की कोशिश मिलेगी जिनके नाम पर अग्नि में आहुति डाली जाती है या फिर यज्ञ के विविध कर्म-उपकर्मों को आध्यात्मिक महत्व के सन्दर्भों में समझाया जा रहा होगा। मसलन, शतपथ में एक जगह आता है कि यज्ञ ही सबसे श्रेष्ठ कर्म है (यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म 1.7.3.5) तो दूसरी ओर यह भी कहा कि यज्ञ कोई सामान्य घटना या कर्म नहीं, वह तो प्रजापति काही प्रत्यक्ष रूप है (एष वै प्रत्यक्षं यज्ञो यत् प्रजापतिः)। फिर यह भी है कि जो व्यक्ति यज्ञ करता है, वह तमाम पापों से छूट जाता है-सर्वस्मात पाप्मनो निर्मुच्यते य एव विद्वान अग्निहोत्रं जुहोति (2.3.1.6)। इस पूरे ताने बाने में रखकर शतपथ्ा में यज्ञों की कहीं दार्शनिक तो कहीं रहस्यात्मक सृष्टि परक तो कहीं भौतिक विज्ञान के आधार पर व्याख्याएँ की गई हैं जो पढ़ने का एक अलग ही मजा देती हैं।

यज्ञों को तो अध्यात्म और विज्ञान के सन्दर्भ में बताया ही गया है, शतपथ ने अध्यात्म को सीधे सीधे एक स्वतंत्र विषय के रूप में भी बड़े ही महत्वपूर्ण तरीके से पुश किया है। पुस्तक के आखिरी अध्याय में शतपथकार ने सिर्फ आत्मा और संसार, बन्धन और मोक्ष जैसे विषयों को ही पूरे विस्तार से इतनी गम्भीरता से उठाया है कि बाद की सदियों में इस आखिरी अध्याय को स्वतन्त्र उपनिषद ग्रन्थ का दर्जा देकर बृहदारण्यकोपनिषद कह दिया गया। यह अपने आप में एक बहुत बड़ी साहित्यिक घटना इस देश की है। अध्यात्म सम्बन्धी तमाम विवेचन में यज्ञावल्क्य के जीवन और विचारों का सहारा लिया गया है तो जाहिर है कि अपने युग का सबसे चर्चित और प्रभावशाली नायक होने के कारण इस नाम ने शतपथ के पूरे आध्यात्मिक विवेचन को एक ऐसी प्रामाणिकता दी जैसे दूसरे ब्राह्मण ग्रन्थों के अध्यात्म विवेचन को कहाँ मिल पाई? याज्ञवल्क्य अपने समय के जबर्दस्त यज्ञ विशारद थे। अध्यात्म तो उनका प्रिय स्वाभाविक विषय था ही। शतपथ में ये दोनों विषय हैं और याज्ञवल्क्य भी हैं। इसलिए अगर अफवाह फैल गई कि याज्ञवल्क्य ने शतपथ की रचना की तो क्या हैरानी? पर याज्ञवल्क्य और शतपथ के बीच सदियों का गैप है। याज्ञवल्क्य फिर कैसे हो गए इस ब्राह्मण के लेखक? तो किसने लिखा शतपथ? अभी भी खोज का मामला है।

अपने देश में प्रचलित कई कथाओं आख्यानों को अपनी खास शैली में प्रस्तुत करने की वजह से भी शतपथ ने दूसरे ब्राह्मणों की तुलना में अपनी खास जगह बना ली है। कैसे अव्यवस्था के प्रलय में से समाज को निकाल कर मनु महाराज ने राज्य व्यवस्था देश में कायम की, यह सारी कहानी बड़े ही सुन्दर अलंकारों से जड़ी भाषा में शतपथ में है। कोई ऐसा भारतवासी भी है जिसे दश की पुरानी कहानियों का तो पता हो और पुरूरवा तथा उर्वसी की प्रेम कहानी से वह अपरिचित हो? देश की इस प्रख्यात प्रेम कहानी के बीज ऋग्वेद में से हैं तो उसका विस्तार शतपथ में है जिसके आधार पर कालिदास ने एक पूरा नाटक लिख दिया था- विक्रमोवंशीय। जनक की ब्रह्मसभा, वहाँ की सारा तर्क श्रृंखला, दुष्यन्त और भरत की अश्वमेघ कथाएँ, जनमेजय के जीवनचरित से जुड़ी कहानियाँ भी शतपथ में हैं।

कहने को तो शतपथ महज एक ब्राह्मण ग्रन्थ है पर दूसरे कुछ महासागरों की तरह यह भी एक ऐसा महासागर है जिसे रामायण और महाभारत जैसा महत्व हमारी परम्परा में मिला है। वे दोनों अपनी शैली में प्रबन्ध काव्य हैं। इसलिए वे आम लोगों के साथ और हर परिवार के मानो सदस्य बन गए। शतपथ की शैली कठिन है। इसलिए उसे वह लोक आधार नहीं मिला। पर दृष्टि, विषय और प्रस्तुति- इस हर लिहाज से शतपथ भारत के महाग्रन्थों की पंक्ति में पूरी इज्जत और प्रतिष्ठा से विराजमान है।

(साभार नवभारत टाइम्स)

विधानसभा चुनाव तैयारी

यूकेडी सभी सीटों पर लड़ेगी

अल्मोड़ा। उत्तराखण्ड क्रान्तिदल के केन्द्रीय अध्यक्ष सुरेन्द्र कुकरेती ने पत्रकार वार्ता में विधानसभा चुनाव की तैयारियों का ऐलान किया और भाजपा-कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा।

यूकेडी नेता ने कहा कि राज्य निर्माण के लिए कई लोगों ने बलिदान दिया। जबकि भाजपा और कांग्रेस ने बारी-बारी से राज्य को लूटने का काम किया। कहा कि जल, जंगल, जमीन को माफिया के हवाले कर दिया गया। वहीं मूल निवास, भू-कानून और गैरसैंण राजधानी जैसे मुद्दों को दबा दिया गया है। अंकिता हत्याकाण्ड, बेरोजगार आन्दोलन और भर्ती परीक्षाओं में नकल जैसे मामलों में यूकेडी ने लगातार जनता के साथ खड़े होकर संघर्ष किया। उन्होंने ऐलान किया कि यूकेडी राज्य की सभी 70 सीटों पर चुनाव लड़ेगी।

पत्रकार वार्ता के अलावा दल की ओर से बाजार में जुलूस भी निकाला गया। इस अवसर पर पूर्व विधायक पुष्पेश त्रिपाठी, आशीष नेगी, दिनेश जोशी, नरेन्द्र बिष्ट, गिरीश नाथ गोस्वामी, दीपा जोशी, किरन मेहरा, रघुवीर भाकुनी भी उपस्थित थे।

पूर्णागिरी मेले की तैयारियां जोरों पर

टनकपुर। सुप्रसिद्ध पूर्णागिरी मेले की तैयारियां जोरों पर हैं। डीएम मनीष कुमार ने मेला क्षेत्र का विस्तृत निरीक्षण करते हुए विभिन्न व्यवस्थाओं की समीक्षा की। उन्होंने सभी विभागों से आपसी समन्वय से कार्य करते हुए समयबद्ध रूप से सभी व्यवस्थाएं पूर्ण करने को कहा है।

दिसम्बर तक टनकपुर में आईएसबीटी बनेगी

टनकपुर। सीएम को ड्रीम प्रोजेक्ट आईएस बीटी का निर्माण दिसम्बर 2026 में पूरा करने का लक्ष्य है। अपग्रेड बजट होने के बाद कार्यदायी संस्था ने 45 प्रतिशत कार्य पूरा कर लिया है। बताया गया है कि नए अपगेड बजट में 187 बस क्षमता और एक बार में 14 बसों ` संचालन का प्लेटफार्म तैयार किया जा रहा है। मुख्य भवन के बेसमेंट में 156 कार क्षमता की पार्किंग आदि होगें।

सीलिंग की 128 बीघा भूमि अधीन

बाजपुर। तहसील अन्तर्गत ग्राम बिचपुरी में प्रशासन ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए 128 बीघा भूमि को अतिरिक्त सीलिंग भूमि घोषित कर राज्य सरकार की सम्पत्ति घोषित कर दिया है। प्रशासन की संयुक्त टीम ने मौके पर जाकर सरकारी स्वमित्व के सूचना बोर्ड चस्पा कर दिया है।

दिल्ली पुलिस का दर्जा देने पर भड़के

रुद्रपुर। असम राइफल्स के सेवानिवृत्त पूर्व सैनिक दिल्ली पुलिस का दर्जा देने से आक्रोशित हो गये हैं। पूर्व सैनिकों ने डीएम कार्यालय पर विरोध प्रदर्शन किया। साथ ही प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति को सम्बोधित ज्ञापन एडीएम को सौंपा। पूर्व सैनिक वेलफेयर एसोसिएशन के बैनर तले बड़ी संख्या में असम राइफल्स से सेवानिवृत्त सैनिक प्रदर्शन करने डीएम कार्यालय पहुंचे थे।

HIMALAYAN MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत
सम्पर्क 7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान)
मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
मो.न. 8958525979, 9411134775
फोन सम्पर्क- 05961-222236
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

उत्तरायणी/माघ खिचड़ी/गणातंत्र दिवस
की
हार्दिक
शुभकामनाओं
के
साथ-

गणेश प्रताप सिंह

पुत्र स्व. प्रताप सिंह ल्वांल
मुख्य प्रबन्धक
(सेवानिवृत)
BOI
गायत्री नगर
काठगोदाम

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

उर्मिला, आरती, सुरेश की लड़ाई में अंकिता प्रकरण सुर्खियों में

निजी झगड़ा बराबर पहेली बना हुआ है

उत्तराखण्ड का अंकिता भण्डारी हत्याकाण्ड प्रकरण में अन्तिम फैसला क्या होगा यह अभी कहना कठिन है लेकिन यह साफ दिखाई देने लगा है कि उर्मिला सनावर, आरती गौड़ और सुरेश राठौर के झगड़े में अंकिता प्रकरण सुर्खियों में है। प्रदेशवासी न्याय की मांग को लेकर शुरू से ही मांग कर रहे हैं लेकिन राजनीति की छाया-माया में रहे-बसे उर्मिला, आरती और सुरेश जिस प्रकार से नित नये वीडियो वायरल कर अचरज कर रहे हैं उससे यह संदेह गहराता जा रहा है कि हत्या, बलात्कार, घपले जैसे मामलों में कई लोग हैं और मामला अंकिता के अलावा अन्य भी हो सकते हैं।

उर्मिला, आरती और सुरेश राठौर अपने को पाकसाफ बताते हुए एक-दूसरे की पोल खोलने और मौके-बेमौके भाजपा कांग्रेस पाले की बात कर रहे हैं। जितना कुछ सोशल मीडिया में वायरल हुआ है उससे लोग अपने-अपने तरीके से गुस्सा, रहस्य, रोमांच सबकुछ ढूंढ रहे हैं। इन दिनों सोशल मीडिया पर लगातार इन लोगों के तरह-तरह के वीडियो जारी हो रहे हैं जबकि अचानक प्रकट हुए कई चेहरे फिलहाल चुप्पी साधे हुए हैं क्योंकि जिस प्रकार का चल रहा है इसके अन्त का अभी पता नहीं है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)